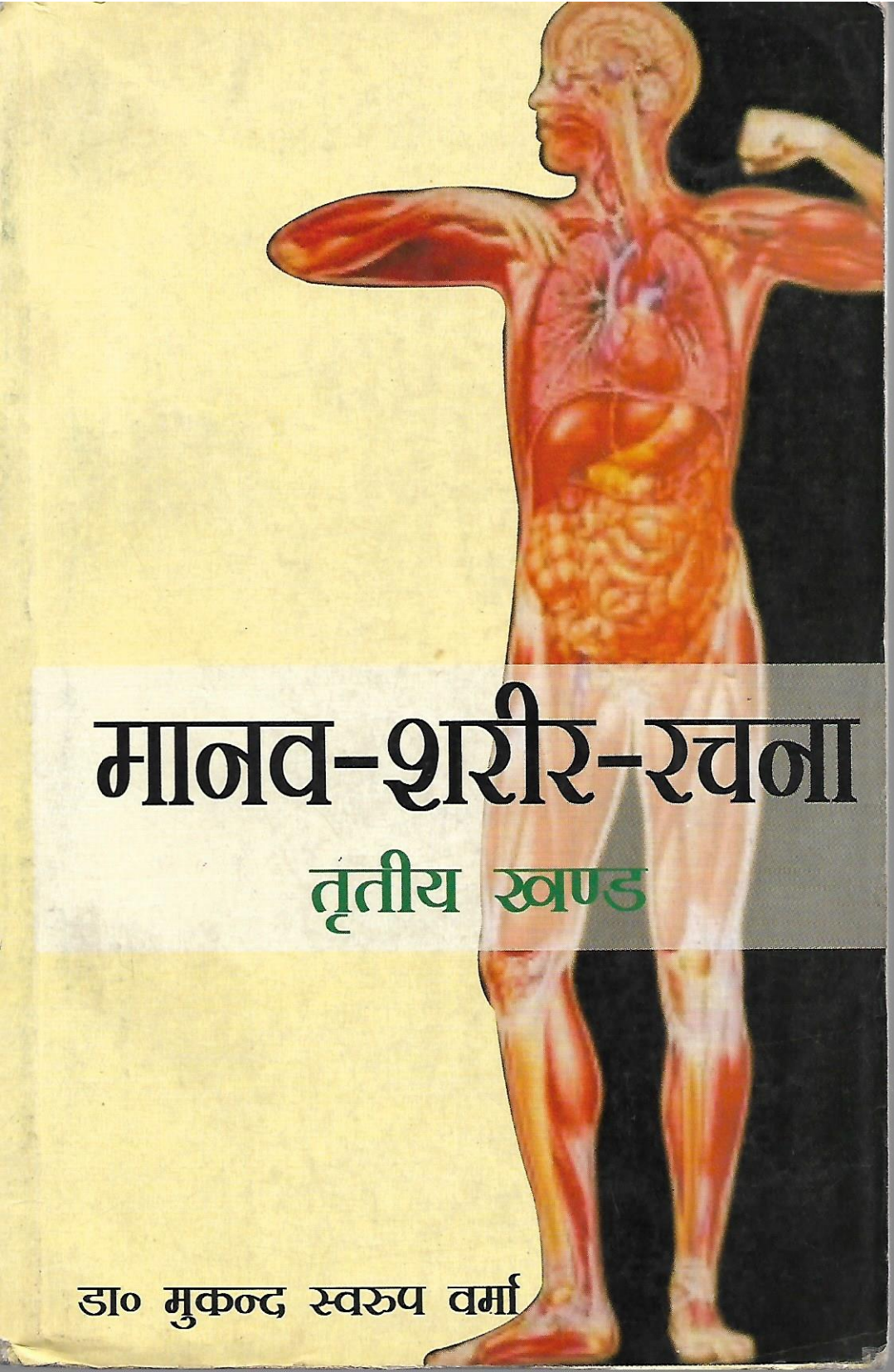

मानव-शरीर-रचना

तृतीय खण्ड

डा० मुकन्द स्वरुप वर्मा

मानव-शरीर-रचना

तृतीय खंड

लेखक

डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा

बी० एस-सी०, एम० बी० बी० एस०

भूतपूर्व प्रधानाचार्य,

आयुर्विज्ञान महाविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

सम्पादक

डा० रमेशचन्द्र गर्ग

भूतपूर्व सहायक निदेशक (आयुर्विज्ञान), केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

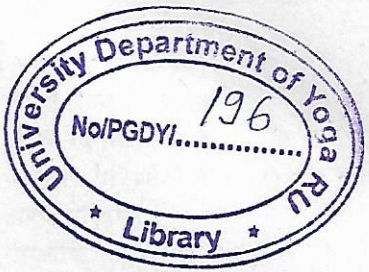

DROLIA PUSTAK BHANDAR
Yoga, Ayurveda, Religious Books & Satkarma Acupressure evam Magnate Goods
09458949381, 01334-260614,09837300687
Near Bharat Mata Mandir, Haridwar-249410 (U.K.) INDIA
E-mail : drolia_books@yahoo.co.in
Website : www.droliabooks.com

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता, बंगलौर,

वाराणसी, पुणे, पटना

विषयानुक्रमणिका

1. **तंत्रिका तंत्र प्रकरण** (Neurology) पृष्ठ

विषय प्रवेश	1115
तंत्रिका तंत्र के रचनात्मक अवयव या घटक	1116
अन्तराकोशिका या संयोजक न्यूरोन	1118
तंत्रिका तंत्र के क्रियात्मक अवयव	1119
तंत्रिका तंतुओं के अंत	1120
बालों (लोम, रोम) के तंत्रिका अन्तांग	1121
ग्राहक तंत्रिकान्तों का कार्य	1126
प्रभावी तंत्रिकान्त	1127
तंत्रिका तंत्र के भाग	1128
केन्द्रीय (मध्यवर्ती) तंत्रिका तंत्र	1130
मेरु रज्जु	1131
विदर और परिखाएं	1132
मेरु तंत्रिकाएं और तंत्रिका मूल	1133
मेरु रज्जु की आन्तरिक रचना	1136
धूसर द्रव्य की संरचना	1139
अग्र स्तम्भ की कोशिकाओं का क्रियात्मक महत्व	1140
पश्च धूसर स्तम्भ की तंत्रिका कोशिकाएं	1142
श्वेत द्रव्य की संरचना	1144
अग्र रज्जुका के पथ	1145
पार्श्व रज्जुका के पथ	1147
पश्च रज्जुका के पथ	1150
अनुप्रस्थ परिच्छेदों में मेरु रज्जु के भिन्न भिन्न प्रदेशों की पहचान	1151
पश्च मस्तिष्क	1153
मेरुशीर्ष	1154
मेरुशीर्ष की आन्तरिक रचना	1157
पौन्स	1166
ऊर्ध्व अनुमस्तिष्क वृन्त	1175
अनुमस्तिष्क	1175
अनुमस्तिष्क का पृष्ठीय रेखांकन	1176

अनुमस्तिष्क के खण्ड	1179
अनुमस्तिष्क की आभ्यंतर रचना	1180
अनुमस्तिष्क का धूसर द्रव्य	1184
चतुर्थ निलय	1187
मध्य मस्तिष्क	1192
मध्य मस्तिष्क की आन्तरिक संरचना	1194
मस्तिष्क मूल (स्तम्भ) की जालक रचना	1201
अग्र मस्तिष्क	1202
पीयूषिका	1210
तृतीय निलय	1217
उन्मस्तिष्क	1219
प्रमस्तिष्क गोलार्ध	1219
प्रमस्तिष्क गोलार्धों के पृष्ठ	1220
प्रमस्तिष्क गोलार्ध का निम्न पृष्ठ	1231
घ्राण मस्तिष्क	1232
प्रमस्तिष्क के प्रान्तस्था की संरचना	1238
प्रान्तस्था के क्षेत्र	1240
प्रमस्तिष्क संयोजिकाएं और स्वच्छ पट	1250
गोलार्धों का आभ्यन्तर	1253
रेखित पिंड का क्रियात्मक महत्व	1264
मस्तिष्क और मेरुरज्जु की कलाएं	1267
दृढतानिका या डूरामेटर	1268
मेरुरज्जु की दृढतानिका	1272
अरकनाइड : जालतानिका	1274
मृदुतानिका	1277
तंत्रिकातन्त्र का परिसरीय भाग	1279
परिसरीय तंत्रिकाओं और गंडिकाओं की संरचना	1279
कपाल तंत्रिकाएं	1282
घ्राण तंत्रिकाएं	1282
दृष्टि तंत्रिका	1283
नेत्रप्रेरक तंत्रिका, नेत्रचालक तंत्रिका	1285
चक्रक तंत्रिका	1288
त्रिधारा तंत्रिका	1290
नेत्र तंत्रिका	1291
ऊर्ध्वहनु तंत्रिका	1294

अधोहनु तंत्रिका	1300
अपवर्तनी तंत्रिका	1306
आनन तंत्रिका	1307
प्रघाणकर्णावर्ततंत्रिका	1314
जिह्वाग्रसनी तंत्रिका	1317
वागस तंत्रिका	1320
सहायिका तंत्रिका	1328
ऊधोजिह्वा तंत्रिका	1330
मेरु तंत्रिकाएं, सौषुम्निक तंत्रिकाएं	1333
मेरु तंत्रिकाओं की अभिपृष्ठ प्रशाखाएं	1337
ग्रैव तंत्रिकाओं की अभिपृष्ठ प्रशाखाएं	1137
वक्ष (उरो) तंत्रिकाओं की अभिपृष्ठ प्रशाखाएं	1339
कटि तंत्रिकाओं की अभिपृष्ठ प्रशाखाएं	1340
त्रिक तंत्रिकाओं की अभिपृष्ठ प्रशाखाएं	1340
मेरु तंत्रिकाओं की अभ्युदर प्रशाखाएं	1341
ग्रैव तंत्रिकाओं की अभ्युदर प्रशाखाएं	1341
ग्रैव (तंत्रिका) जालिका	1342
ग्रैव जालिका की उपरिस्थ शाखाएं	1343
ग्रैव जालिका की गभीर शाखाएं—अभिमध्य श्रृंखला	1345
मध्यच्छदिकीय सम्बन्ध	1347
ग्रैव जालिका की गभीर शाखाएं–पार्श्व श्रृंखला	1349
प्रगंड जालिका	1349
अधिजत्रुक शाखाएं	1351
अभिपृष्ठ अंसफलक तंत्रिका	1351
अधोजत्रुक शाखाएं	1352
उरो तंत्रिकाओं की अभ्युदर प्रशाखाएं	1366
कटि तंत्रिकाओं की अभ्युदर प्रशाखाएं	1370
कटि जालिका	1370
त्रिक और अनुत्रिक तंत्रिकाओं की अभ्युदर प्रशाखाएं	1378
त्रिक जालिका	1378
सामान्य बहिर्जंघिका तंत्रिका	1388
अनुत्रिक जालिका	1392
स्वचालित तंत्रिका तंत्र	1393
परानुकम्पी तंत्र	1395

अभिवाही भार्ग 1398
अनुकम्पी तंत्र 1398
अपवाही मार्ग 1398
क्रियात्मक महत्व 1402
स्वचालित तंत्र का कपाली भाग 1403
आभ्यन्तर कैरोटिड जालिका 1403
अनुकम्पी तंत्र का ग्रैव भाग 1405
अनुकम्पी तंत्र का उरो भाग 1410
अनुकम्पी तंत्र का कटि भाग 1411
अनुकम्पी तंत्र का श्रोणिगत भाग 1413
स्वचालित तंत्रिका तंत्र की महा जालिकाएं 1414
हृद् जालिका 1414
फुप्फुसी जालिकाएं 1415
कुक्षि जालिका 1416
ऊर्ध्व अधोजठर जालिका 1420
निम्न अधोजठर जालिका 1421

2. **ज्ञानेन्द्रियां और त्वचा** (Organs of Special Senses and Skin)

विशेष ज्ञानेन्द्रियों के परिसरीय अंग 1425
स्वाद तंत्रिकाएं 1427
घ्राणेन्द्रिय 1427
परानासा वायुविवर 1434
दृष्टि की इन्द्रिय 1438
रक्तवाहिकामय कंचुक या असित पटल 1444
रोमक प्रवर्ध 1447
रोमक पेशी 1447
आइरिस की सूक्ष्म रचना 1449
पीठिका 1450
आइरिस की वाहिकाएं 1452
तंत्रिकीय कंचुक-रेटिना, दृष्टिपटल 1453
रेटिना की संरचना 1454
पीत बिन्दु क्षेत्र की विशेषताएं 1463
नेत्र के अपवर्तक माध्यम 1465
नेत्रोद 1465
काचाभ पिंड 1466
लेंस 1468

लेंस की संरचना 1468
नेत्र के अपर अंग 1470
नेत्रगोलक पर प्रावरणीकृत विधान 1473
नेत्रगुहा प्रावरणी 1474
नेत्र भ्रू 1474
नेत्र पक्ष्म 1475
नेत्रच्छदों की रचना 1476
नेत्रश्लेष्मला (कंजंक्टाइवा) 1477
अश्रु उपकरण 1480
अश्रु ग्रन्थि 1480
श्रवण और प्रघाण उपकरण 1482
बाह्य कर्ण 1482
पेशियां—बहिरस्थ 1485
बाह्य श्रवण कुहर 1486
मध्यकर्ण, मध्य गुहा 1489
मध्य कर्ण गुहा की सीमाएं 1489
मध्यकर्ण पटह 1491
अभिमध्य भित्ति 1493
आनन तंत्रिका का नलिका उत्सेध 1494
कर्णमूल वायु कोशिकाएं 1496
श्रवण अस्थिकाएं 1498
मध्यकर्ण गुहा की पेशियां 1502
आभ्यन्तर कर्ण 1504
कलाकृत लेबिरिन्थ 1510
श्रवण की क्रियाविधि 1515
प्रघाणकर्णावर्त तंत्रिका 1516
त्वचा 1519
संरचना 1521
अन्तस्त्वचा, अन्तस्त्वक् 1522
त्वग्वसा ग्रन्थियां 1525
स्वेद ग्रन्थियां 1526
कर्णगूथ या कर्णमूल ग्रन्थियां 1527

3. **आशय प्रकरण** (Splanchnology)

श्वसन तंत्र 1528
स्वरयंत्र 1528

अवटुका उपास्थि	1529
मुद्रिका उपास्थि	1531
दर्वीकल्प उपास्थियां	1533
श्रृंगी या कार्नीकुलेट उपास्थियां	1533
कीलक उपास्थियां	1533
कंठच्छद (एपीग्लोटिस) की उपास्थि	1534
कंठच्छद का कार्य	1535
संरचना	1535
स्नायु और कलाएं	1537
मुद्रिका-श्वासप्रणाल स्नायु	1538
स्वरयंत्र की गुहा	1538
स्वरयंत्र का अन्तर्गम	1539
स्वरयंत्र का प्रघाण	1539
स्वरयंत्र गुहा का मध्य भाग	1539
स्वरयंत्र का लघुकोश	1540
प्रघाण पुटक	1540
स्वर पुटक	1540
कंठ रेखाछिद्र	1541
अन्तःस्थ पेशियां	1542
स्वरयंत्र की श्लेष्मिक कला	1545
श्वासप्रणाल और श्वसनियां	1546
श्वासप्रणाल के सम्बन्ध	1546
वाम मुख्य श्वसनी	1549
प्लूरा, परिफुफ्फुस अथवा फुफ्फुसावरण	1553
मध्यस्थानिका	1557
अग्र मध्यस्थानिका	1557
मध्य मध्यस्थानिका	1558
पश्च मध्यस्थानिका	1558
फुफ्फुस	1559
फुफ्फुसों के खंड और विदर	1564
फुफ्फुसों की मूलें	1565
पाचक तंत्र	1570
लाला ग्रन्थियां	1577
कर्णपूर्व ग्रन्थि	1578
कर्णपूर्व ग्रन्थि वाहिनी	1581
अव-अधोहनु ग्रन्थि	1582
अव-अधोहनु ग्रन्थि वाहिनी	1583

अधोजिह्वा ग्रन्थि	1584
दांत	1585
दांतों के सामान्य अभिलक्षण	1586
स्थायी दांत	1589
कृन्तक दांत	1589
रदनक दांत	1590
अग्र चर्वणक	1591
चर्वणक दांत	1591
पतनशील या अस्थिर अथवा अस्थायी दांत	1592
जिह्वा	1594
ग्रसनी	1603
ग्रसनी का नासा भाग	1604
ग्रसनी का मौखिक भाग	1605
तालु टौंसिल	1606
ग्रसनी का स्वरयंत्र भाग	1608
कोमल तालु की गतियां	1614
निगलने की क्रियाविधि	1615
ग्रासनली	1616
उदर	1620
मुख्य उदर	1621
प्रदेश	1623
नाभि	1624
पर्युदर्या	1627
बृहद् कोश की उच्चार्धर स्थिति	1628
बृहद् कोश की क्षैतिज स्थिति	1631
वपा बर्सा	1635
वपा	1640
लघ् वपा	1640
बृहद् वपा	1640
आंत्र योजनियां	1641
उण्डुकपुच्छयोजनी	1642
अनुप्रस्थ बृहदान्त्रयोजनी	1642
अवग्रह बृहदान्त्रयोजनी	1643
पर्युदर्या दरियां	1643
ग्रहणी की दरियां	1644
अंधात्र की दरियां	1645

पर्युदर्या गुहा के विशेष प्रदेश	1647
श्रोणि गुहा	1647
आमाशय	1648
वक्रताएं	1650
क्षुद्रान्त्र	1657
ग्रहणी	1658
मध्यान्त्र	1663
शेषांत्र	1663
बृहदांत्र	1671
अंधांत्र	1671
उण्डुकपुच्छ	1674
आरोही बृहदांत्र	1676
अनुप्रस्थ बृहदांत्र	1676
अवरोही बृहदांत्र	1677
अवग्रह बृहदांत्र	1678
मलाशय	1679
गुद, गुद नलिका	1683
बृहदांत्र की रचना	1687
अग्न्याशय	1689
अग्न्याशय वाहिनी	1693
यकृत	1694
खंड	1695
यकृत के पर्यदर्याकृत अनुषंग	1696
दात्राकार स्नायु	1696
किरीटी स्नायु	1697
वाम त्रिकोणाकार स्नायु	1698
दक्षिण त्रिकोणाकार स्नायु	1698
शिरा स्नायु का विदर	1700
यकृत प्रतिहार	1702
पुच्छक प्रवर्ध	1702
प्रतिहारणी शिरा और मुख्य यकृत धमनी	1703
यकृत की रचना	1704
अन्तर्खंडिका शिरानालाभ	1705
यकृत का उत्सर्गी उपकरण	1706
सामान्य यकृत वाहिनी	1707
पित्ताशय	1708
पित्ताशय वाहिनी	1709

पित्त वाहिनी	1709
मूत्र-प्रजनन तंत्र	1712
वृक्क	1712
वृक्क का अंगरेखन	1713
वृक्क की सामान्य रचना	1718
गवीनियां	1724
मूत्राशय	1728
पुरुष का मूत्रमार्ग	1736
स्त्री का मूत्रमार्ग	1739
पुरुष जननेन्द्रियां	1740
वृषण	1741
अधिवृषण	1741
शुक्र वाहिनी	1748
पराधिवृषण	1749
शुक्राशय और शुक्रप्रसेचक वाहिनी	1750
शुक्राशय	1750
शुक्रप्रसेचक वाहिनी	1751
वृषण रज्जु और उसके आच्छादन	1752
वृषणकोश	1753
शिश्न	1755
पुरस्थ	1760
स्त्री जनन अंग	1863
डिम्ब ग्रन्थियां	1763
डिम्ब पुटिकाएं	1766
पीत पिंड	1769
गर्भाशय नलिका	1679
गर्भाशय	1771
गर्भाशय ग्रीवा	1773
गर्भाशय का आभ्यन्तर	1774
ग्रीवा की नलिका	1774
पृथु स्नायु	1778
गोल स्नायु	1779
योनि	1780
बाह्य स्त्री जनन अंग	1782
बृहद् भगोष्ठ	1782
लघु भगोष्ठ	1783

प्रघाण	1783
भग शिश्निका	1784
योनिच्छद	1785
बाह्य मूत्रमार्ग द्वार	1786
प्रघाण का कंद	1786
स्तन	1786
स्त्री स्तन	1787
चूचुक	1787
निःस्रोत ग्रन्थियां	1791
अवटुका ग्रन्थि	1791
परावटुका ग्रन्थि	1796
क्रोमेफिन तंत्र	1797
कैरोटिड पिंड	1799
ग्रीवा वाहिका गुच्छ अथवा मध्यकर्ण पिंड	1800
अनुत्रिक पिण्ड	1801
अधिवृक्क ग्रन्थियां	1801
थाइमस, बाल्य ग्रन्थि	1806
मानव शरीर रचना सम्बन्धी पर्यायवाची शब्दावली	1809

भारत भैषज्य रत्नाकर

(५ भागों में)

सं० रसवैद्य नगीनदास छगनलाल शाह

वैद्य गोपीनाथ गुप्त कृत हिन्दी व्याख्या सहित

आयुर्वेदीय साहित्य में फार्माकोपिया के अभाव को ध्यान में रखकर इस ग्रंथ की रचना की गई है। इसमें क्वाथ, चूर्ण, अवलेह, गुटिका, घृत, तेल, रस इत्यादि प्रकरणों में विभक्त दस सहस्त्र से अधिक प्राचीन एवं अर्वाचीन प्रयोगों का संग्रह सैकड़ों ग्रंथों का मंथन करके किया गया है।

इस ग्रंथ में कोश-शैली का अनुसरण किया गया है जिससे इष्ट प्रयोग बिना किसी कठिनाई के ढूंढा जा सकता है। भिन्न-भिन्न ग्रंथों और पृथक्-पृथक् अधिकारों में एक नाम के जितने प्रयोग पाये जाते हैं वे सब इसमें आ गए हैं। रोगानुसारिणी सूची 'चिकित्सापथ-प्रदर्शनी' नाम से अंत में दे दी गई है जिससे इस ग्रंथ की व्यावहारिक उपयोगिता बहुत बढ़ गई है।

आधुनिक चिकित्साशास्त्र

धर्मदत्त वैद्य

इस ग्रंथ की यह विशेषता है कि इसमें आधुनिक काय-चिकित्सा वर्णन के साथ-साथ आयुर्वेदिक कायचिकित्सा का भी उल्लेख है। ये दोनों एक-दूसरे के सहायक सिद्ध हुए हैं। जहाँ आधुनिक काय-चिकित्सा How के प्रश्न का समाधान करती है वहीं आयुर्वेदिक काय-चिकित्सा Why के प्रश्न का समाधान करती है अर्थात् रोग का मूल कारण बताती है, जिसके फलस्वरूप चिकित्सा सुगम और ठीक होती है। यह स्पष्ट बताती है कि शरीर के तीन मूल तत्व—देहाग्नि, देह-प्राण तथा देहवृद्धि हैं। इनके किसी अंग में मन्दता आ जाने से रोगोत्पत्ति होती है। इसमें रोगों के निदान, कारण, लक्षण और उनके भेद-प्रभेद बताकर साथ ही उनकी उचित चिकित्सा का मार्ग-दर्शन किया गया है। समस्त रोगों के सूक्ष्म लक्षणों पर प्रकाश डालते हुए तदनुसार औषधियों का भी निर्देशन किया गया है। इसलिये यह नवीन पद्धति पर निर्मित एक महान् ग्रन्थ है।

किसी प्रकार की औषधि कहाँ लाभ पहुँचा सकती है, स्त्रीयों, पुरुषों एवं बच्चों के विभिन्न रोगों में विभिन्न प्रकार की कौन-सी औषधि रामबाण सिद्ध हो सकती है? ये सब बातें अनुभवी लेखक ने इस पुस्तक में विस्तार से बताई हैं।

मोतीलाल बनारसीदास
दिल्ली • मुम्बई • चेन्नई • कोलकाता
बंगलौर • वाराणसी • पुणे • पटना

E-mail: mlbd@vsnl.com
Website: www.mlbd.com

मूल्य: रु० 395 (सजिल्द) **कोड: 22702**

ISBN 978-81-208-2271-9

मूल्य: रु०295 **कोड: 22719**